सारांश

सांसद आदर्श ग्राम योजना जिसमे प्रत्येक सांसद को अपने संसदीय क्षेत्र से एक गाँव को गोद लेकर उसके आधारभूत अवसंरचना, आर्थिक अवसंरचना एवं सामाजिक अवसंरचना का विकास करना है जिससे की अन्य गाँव उसका अनुकरण करके अपना विकास करने के लिए प्रोत्साहित हो। माननीय प्रधानमन्त्री द्वारा जयापुर गाँव को गोद लिया गया और इसमे योजना में सम्मिलित सभी घटकों को पूरा करने का प्रयास किया। इस गाँव को प्रधानमन्त्री द्वारा गोद लिए जाने के कारण सरकारी मशीनरी के साथ-साथ बिभिन्न औद्दोगिक घराने एवं गैरसरकारी संगठन भी इस गाँव में बढ़-चढ़ कर निवेश कर रहे है और बिभिन्न प्रकार के क्रिया-कलापों का संचालन कर रहे हैं। जिसके कारण इस गाँव में योजना से सम्बंधित बहुत से पहलुओं पर काम किया गया, परन्तु इसके गुणात्मक और परिमाणात्मक पहलू पर कुछ नहीं कहा जा सकता।

दुल्लहपुर शंकर सिंह गाँव तत्कालीन केन्द्रीय रेल राज्यमंत्री मनोज सिन्हा द्वारा गोद लिया गया था। इस गाँव में योजना से सम्बंधित किसी भी घटक को पूरी तरह पूरा नहीं किया जा सका है। इस गाँव के प्रति माननीय सांसद जी, सरकारी मशीनरी एवं गैरसरकारी मशीनरी सभी के सभी उदासीन रहे है। गाँव में जो विकास कार्य योजना लागू होने चाहिए थे वैसा कुछ नहीं हुआ है केवल योजना के नाम पर कुछ खानापूर्ति की गयी है।

इन दोनों गाँवों को देखने से स्पष्ट होता है कि किसी भी गाँव को विकसित करने से पहले उस गाँव की सामाजिक एवं आर्थिक संसाधनों का अच्छे से मूल्यांकन किया जाए और जो योजना उनके लिए बनायी जा रही है उसके लिए पहले उनकी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा किया जाए तभी योजना अपने उद्देश्यों में सफल हो पाएगी।

Summary

Saansad Adarsh Gram Yojna, in which every M.P adopts a village from its parliamentary area to develop its basic infrastructure, economic infrastructure and social infrastructure, so that other villages are encouraged to follow their development and imitate it. Jayapur village was adopted by Hon'ble Prime Minister and tried to full-fill all the components included in the scheme. Due to the adoption of this village by the Prime Minister, various industrial houses and non-governmental organizations along with government machinery are also investing in this village and are conducting different types of activities. Due to this, many villages related to the scheme were employed in this village, but nothing can be said on its qualitative and quantitative aspect.

Dullahapur Shankar Singh village was adopted by the then Union Minister of State for Railways Manoj Sinha. In this village, any component related to the scheme could not be completely fulfilled. All of the Honourable MPs, government machinery and non-government machinery towards this village have been disinterested. Nothing has happened

in the development plan which should have been implemented in the village, but only some scheme has been done in the name of the scheme.

By observing these two villages, it is evident that before developing any village, the social and economic resources of that village should be well-evaluated and for the planning being made for them, their basic needs should first be met. Only then will the scheme be successful in its objectives.